❀ श्रीसर्वेश्वरो जयति ❀

श्रीपरशुराम-स्तवावली



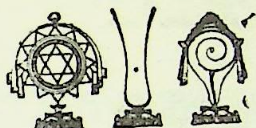
रचयिता—

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री "श्रीजी" महाराज

॥ श्रीसर्वेश्वरो जयति ॥



॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

श्रीपरशुराम-स्तवावली

रचयिता—

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री "श्रीजी" महाराज

प्रकाशक—

अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

किशनगढ़, अजमेर [राजस्थान]

कार्तिक शु. पूर्णिमा (श्रीनिम्बार्क जयन्ती)

वि० सं० २०५६ श्रीनिम्बार्काब्द ५०९५

॥ श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ॥

❋ समर्पणम् ❋

इयं परशुरामश्रीदेवाचार्यपदाम्बुजे
सश्रद्धमर्प्यते सम्यक्स्तवावली मनोहरा।

कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा मङ्गलवार
श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य जयन्ती महोत्सव
वि० सं० २०५६
दिनांक २३-११-१९९९

श्रीमदाचार्यवर्यपदकञ्जमकरन्दकामः-
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यः

॥ श्रीराधासर्वेश्वरो जयति ॥



अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज

❀ स्वकीय-भावोद्गार ❀

समस्त वैष्णव चतु:सम्प्रदाय में निम्बार्क-सम्प्रदाय अत्यन्त प्राचीनतम है। इस सम्प्रदाय के आद्याचार्य सुदर्शनचक्रावतार श्रीनिम्बार्क भगवान् है। आपको देवर्षिवर्य श्रीनारदजी से श्री-गोपालमन्त्रराज का उपदेश एवं श्रीसनकादि महर्षिवर्य संसेवित श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा एवं उक्त मन्त्र का उपदेश मिला और श्रीसनकादिकों को यही श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा तथा श्रीमन्त्र-राज का पावन उपदेश प्राप्त हुआ जो आगे चलकर श्रीदेवर्षि द्वारा जिसे श्रीनिम्बार्क भगवान् ने प्राप्त किया। और यही पूर्वाचार्य-परम्परा प्राप्त उपदेश एवं श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर रसिकराजराजेश्वर श्रीहरिव्यास-देवाचार्यजी महाराज से श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश श्रीमत्परशु-रामदेवाचार्यजी महाराज को प्राप्त हुई।

इन आचार्यवर्य ने श्रीमद्गुरुचरणारविन्दों की आज्ञानुसार मरुभूमि के सुरम्य क्षेत्र में समस्त तीर्थ-गुरु जो श्रीहँसावतार का प्रमुख स्थल है जगत्पिता श्रीब्रह्मा की पावन यज्ञ-स्थली है उसी के निकटतम क्षेत्र में साभ्रमती-तटवर्ती निम्बार्कतीर्थ जिसका वर्णन "पद्मपुराण" में है यहाँ आचार्यवर्य श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महा-राज ने पधार कर यवन तान्त्रिक को अपने दिव्य तप: प्रभाव से परास्त कर इस पवित्र भूमि को आपश्री ने तप: साधना कर अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ की संस्थापना की। जिसे पांच सौ वर्ष से भी अधिक समय व्यतीत हुआ। यद्यपि निम्बार्क-सम्प्रदाय का शुभारम्भ इस भूतल पर पाँच सहस्त्र वर्ष पूर्व का है। सम्प्रदाय के पूर्वाचार्यप्रवर सभी मुख्यत: व्रजमण्डल स्थित गिरिराज श्रीगोव-र्धन के निकट निम्बग्राम में ही विराजते रहे हैं। मथुरा-श्रीवृन्दा-

वन आदि स्थलों पर भी यथावसर विराजे हैं। किन्तु विशेषत:

निम्बग्राम ही प्राचीन निवास–स्थली रही है। श्रीमदाचार्यवर्य श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज ने ही मरुभूमि (मारवाड़) पुष्करारण्य क्षेत्र में पधार कर अपने लोकोत्तर दिव्य प्रभाव से सनातन वैष्णव धर्म का विपुल प्रचार किया। विधर्मियों का शमन किया। आपने अपने वृहद्–ग्रन्थ 'श्रीपरशुराम सागर' में भगवान् श्रीराधाकृष्ण की दिव्य–उपासना, सिद्धान्त, भक्तितत्त्व एवं लोकोपकारी उपदेशपूर्ण उद्बोधन प्रदान किया जो अनुपम है। इस अनुपम ग्रन्थ पर डा० श्रीरामप्रसादजी शर्मा एम. ए. पी. एच. डी. (किशनगढ़) ने शोध ग्रन्थ का प्रणयन एवं मूल ग्रन्थ का प्रकाशन कर सम्प्रदाय की चिरस्मरणीय सेवा की है। श्रीमदाचार्य-प्रवर ने भक्तिमती मीरां बाई को वैष्णवी दीक्षा प्रदान कर भगवान् श्रीगिरिधरगोपालजी की सेवा प्रदान की। आपके इस प्रसङ्ग को पं. श्रीचन्द्रदत्तजी पुरोहित (परबतसर) ने मीरां बाई नामक पुस्तक में विस्तारपूर्वक तथ्यपूर्ण वर्णन किया है।

भारत की राजधानी–दिल्ली के मुस्लिम सम्राट् बादशाह श्रीशेरशाहशूरि ने आपका शुभाशीर्वाद प्राप्त कर सलीमशाह नामक पुत्ररत्न की प्राप्ति की थी और जिसके नाम से श्रीनिम्बार्कतीर्थ में सलेमाबाद नामक नगर बसाया जो यथावत् अद्यावधि विद्यमान है। आचार्यप्रवर श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज के अनेक चमत्कारपूर्ण प्रसङ्ग हैं जिनका विस्तारभय से यहाँ उल्लेख नहीं किया गया है सम्प्रदाय के अन्य ग्रन्थों में जिज्ञासुजनों को अवलोकन करना हितावह रहेगा। अभी उन्हीं आचार्यचरणकमलों के परमानुग्रह से जो अपने अन्तर्मानस में प्रेरणा हुई उसे ही अति संक्षिप्त मङ्गल-स्तवों के रूप में इसे एक लघु कलेवर रूप पुस्तकाकार में भक्तों–साधकों के हितार्थ प्रकाशित कर दिया है जिसका आप मनोयोग से श्रद्धापूर्वक अनुशीलन करेंगे तो अवश्य ही आप लाभान्वित होंगे।

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

॥ श्रीराधासर्वेश्वरो जयति ॥

।। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ।।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर—

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री "श्रीजी" महाराज

विरचित—

श्रीपरशुराम–स्तवावली

(१)

राधासर्वेश्वरं ध्यात्वा निम्बार्कञ्च पुनः पुनः ।
श्रीमत्परशुरामञ्च वन्दे प्रणतिपूर्वकम् ।।

वृन्दावननवनिकुञ्जविहारी श्रीराधासर्वेश्वर प्रभु का एवं सुदर्शनचक्रावतार आद्याचार्यवर्य श्रीनिम्बार्क भगवान् का पुनः-पुनः ध्यान करके साष्टाङ्ग प्रणतिपूर्वक अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीमत्परशुरामदेवाचार्यजी महाराज को मङ्गल अभिवन्दना करते हैं ।।१।।

(२)

स्वीयगुरोः पदाम्भोजं प्रणम्य रच्यते शुभा ।
श्रीमत्परशुरामस्य – स्तवावली सुखावहा ।।

स्वकीय श्रीमद्गुरुचरणारविन्दों में साष्टाङ्ग कोटि-कोटि प्रणाम समर्पित करके परमानन्दप्रदायक परम माङ्गलिक यह "श्रीपरशुराम--स्तवावली" ग्रन्थ का शुभारम्भ करते हैं जो सभी के लिये परम हितकारक है ।।२।।

श्रीमत्परशुरामदेवाचार्याष्टकम्

(१)

आचार्यरूपसुभगं भुवि राजमानं
श्रीमज्जगद्‌गुरुवरं रसिकैः समर्च्यम् ।
निम्बार्कपीठपरिशोभितसुप्रसिद्धं
वन्दे सदा परशुराममहं वरेण्यम् ।

श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य की पावन आचार्यपीठ पर विराजित अतिशय सुशोभित, आचार्यस्वरूप में परम दर्शनीय रसिक भगवज्जनों के द्वारा सर्वदा समर्चनीय भारतवर्ष की रम्य धरा पर परम प्रख्यात श्रीमज्जगद्‌गुरुवरेण्य आचार्यवर्य श्रीमत्परशुरामदेवाचार्यजी महाराज की हम अभिवन्दना करते हैं ।।१।।

(२)

राधामुकुन्दचरणाम्बुजभक्तिनिष्ठं
सर्वेश्वराऽर्चनपरं नितरां प्रसन्नम् ।
भक्ताभिलाषपरिपूरककल्पवृक्षं
वन्दे सदा परशुराममहं वरेण्यम् ।।

श्रीराधामुकुन्द भगवान् के श्रीयुगलचरणारविन्दों की अनन्य भक्ति में परम निष्ठावान् श्रीसनकादि संसेव्य भगवान् श्रीसर्वेश्वर जो गुञ्जाफल सदृश सूक्ष्म शालग्राम स्वरूप दक्षिणावर्त चक्राङ्कित श्रीराधाकृष्ण रूपात्मक देवर्षिवर्य श्रीनारद भगवान से आद्याचार्य श्रीनिम्बार्क भगवान् को सम्प्राप्त तथा जो सम्प्रदाय आचार्य परम्परा प्राप्त दिव्य मनोहर श्यामल स्वरूप

जिनकी सुन्दर सेवा–अर्चना में सर्वदा तत्पर तथा प्रमुदित मनस्क एवं परम भागवत भगवत्परायण भक्तों के अभिलषित मनोरथों को परिपूर्ण करने वाले कल्पवृक्ष स्वरूप परमवरेण्य आचार्यवर्य श्रीमत्परशुरामदेवाचार्यजी महाराजश्री के पावन चरण-सरोरुह जो नितान्त रूपेण परमवरेण्य है उनकी पवित्र अभिवन्दना करते हैं ।।२।।

(३)

गोपालमन्त्रसमुपासनसुप्रवीणं
श्रीमन्मुकुन्दशरणागतिमन्त्रसिद्धम् ।
स्वीयाऽऽश्रिताऽऽशुवरदं कमनीयगात्रं
वन्दे सदा परशुराममहं वरेण्यम् ।।

"श्रीगोपालतापिनी" उपनिषद्-प्रोक्त पञ्चपदी विद्यात्मक अष्टादशाक्षर मन्त्रशेखर श्रीगोपालमन्त्रराज एवं "श्रीनारद–पञ्चरात्र" वर्णित अष्टाक्षर श्रीमन्मुकुन्दशरणागतिमन्त्र के अनवरत अनुष्ठान पूर्वक श्रीराधासर्वेश्वर प्रभु की समुपासना में अभिनिरत तथा जिन्हें उपर्युक्त उभय-मन्त्र की परम दिव्य-सिद्धि सम्प्राप्त है । अपने समाश्रित भावुकजनों को तत्काल अभिलषित वरदान प्रदायक, कमनीय स्वरूप में विराजित परमाचार्यवरेण्य श्रीपरशुरामदेवाचार्य श्रीस्वामीजी महाराज की हम मनसा, वाचा, कर्मणा वन्दना करते हैं ।।३।।

(४)

वृन्दावनेश्वररसाब्धिसुधाम्बुधारा–
नृत्यं सदैव मुदितं व्रजभक्तिमान्तम् ।

सौरी-प्रतीरतरुकुञ्जसमाधिलीनं
वन्दे सदा परशुराममहं वरेण्यम् ।।

वृन्दावनेश्वर युगलकिशोर नित्यनिकुञ्जविहारी श्यामाश्याम श्रीराधाकृष्ण भगवान् की निकुञ्ज केलिरससिन्धु की अगाध धारा में अवगाहन पूर्वक परितृप्त एवं श्रीयमुनाजी के अति रमणीय पुलिन पर लता–तरुवरों की मञ्जुज कुञ्जों में श्रीयुगलप्रियाप्रियतम के दिव्य चिन्तन में समाधिस्थ होकर अतीव तल्लीन मुद्रा में विराजित आचार्यप्रवर परम वरेण्य श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज की मङ्गल–वन्दना करते हैं ।।४।।

(५)

होमादिकर्मणि सदाऽभिरतं सुधीशं
मन्त्रप्रभावहततान्त्रिकचक्रवातम् ।
वाणीमनोज्ञरचनापरमप्रवीणं
वन्दे सदा परशुराममहं वरेण्यम् ।।

वेदादि शास्त्र विहित अग्निहोत्रादि (हवन) कर्म में सदा नियमित नित्य रूप से अभिरत एवं श्रुति–स्मृति–सूत्र–तन्त्र–पुराणादि शास्त्रों के परम मर्मज्ञ सुधी–श्रेष्ठ एवं अपने श्रीमन्त्रराज के अमित प्रभाव से अनेक तामसिक–तान्त्रिकों के चक्रवात अर्थात् दुष्प्रभाव को जिन्होंने पूर्णतः परिशमन कर दिया है तथा अपनी परम मनोहारी दिव्य वाणी से "श्रीपरशुरामसागर" जैसे महान् ग्रन्थ के सृजन करने में जो अतिशय प्रवीण हैं ऐसे उन आचार्य शिरोमणि श्रीपरशुरामदेवाचार्य श्रीस्वामीजी महाराज को नित्य वन्दना समर्पित करते हैं ।।५।।

(६)

श्रीपुष्करे प्रतिदिनं शुभगाहमानं
वृन्दामनोज्ञमणिवृन्दसुकण्ठमालम् ।
निम्बार्कतीर्थसलिलाऽऽचमनाऽऽप्तसौख्यं
वन्दे सदा परशुराममहं वरेण्यम् ।।

कोटि–कोटि तीर्थों के गुरु पद पर प्रतिष्ठित श्रीपुष्करराज के अगाध जल में प्रतिदिन अवगाहन पूर्वक स्नान–शील एवं "पद्मपुराण" वर्णित श्रीनिम्बार्कतीर्थ के पावन जल के आचमन–मार्जन से परमानन्द का अनुभव करने वाले श्रीहरिप्रिया वृन्दा (तुलसी) की सुन्दर मणियों की कण्ठी माला से जिनका कण्ठ प्रदेश अतीव सुशोभित है उन जगद्गुरु-श्रेष्ठ आचार्यवर्य (श्री-स्वामीजी) श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज की प्रणति पूर्वक वन्दना करते हैं ।।६।।

(७)

आचार्यवर्यमनिशं शरणार्थकारं
संसारतापशमने नितरां सुदक्षम् ।
श्रीयुग्मकीर्तनपरं मरुभूनिवासं
वन्दे सदा परशुराममहं वरेण्यम् ।।

शरणागतजनों को धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन पुरुषार्थ चतुष्टय के कृपापूर्वक सतत प्रदाता तथा संसार दावानल के आध्यात्मिक, आधि दैविक, आधि भौतिक इन तापत्रय के सर्वथा शमन करने में अत्यन्त कुशल, श्रीवृन्दावनविहारी युगलकिशोर श्रीराधासर्वेश्वर प्रभु के मङ्गल मधुर नाम संकीर्तन में परम विभोर एवं श्रीपुष्करारण्य के पावन क्षेत्र में 'पद्मपुराणोक्त' श्री

निम्बार्कतीर्थ जो मरुभूमि अर्थात् मारवाड़ में सुशोभित हैं वहाँ जिनका सतत निवास है ऐसे परमाचार्यवर्य श्रीपरशुरामदेवाचार्य जी महाराज के श्रीचरणों में प्रतिदिन की वन्दना समर्पित है ।।७

(८)

निम्बार्कदेशिकमतप्रचुरप्रचारे
सन्नद्धमद्भुततमं परमं दयालुम् ।
आचार्यवर्यमभिशोभितकेशपाशं
वन्दे सदा परशुराममहं वरेण्यम् ।।

श्रीसुदर्शनचक्रावतार आद्याचार्यवर्य श्रीनिम्बार्क भगवान् का जो दार्शनिक-सिद्धान्त स्वाभाविक द्वैताद्वैत लोक प्रसिद्ध है उसके प्रचुर प्रचार-प्रसार में सर्वदा तत्पर परम अद्भुत सुन्दर दयालु स्वरूप अतिकमनीय अलकावली से परम सुशोभित परम-वरेण्य आचार्यवर्य श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज (श्रीस्वामी-जी महाराज) के पावन युगलचरणकमलों में पुनः-पुनः कोटि-कोटि अभिवन्दना प्रस्तुत करते हैं ।।८।।

(९)

अष्टकं परशुरामस्य स्तोत्रं कष्टनिवारकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।

इस निखिल भवार्णव के विविध कष्टों का निवारण करने वाला श्रीमत्परशुरामदेवाचार्याष्टक स्तोत्र जिसकी रचना उन्हीं के कृपाप्रसाद स्वरूप हुई है। भावुकजन श्रद्धापूर्वक इसका पठन करें ।।९।।

श्रीमत्परशुरामदेवाचार्यस्तोत्रम्

निम्बार्काचार्यपीठेशं सेव्यं श्रीमज्जगद्गुरुम् ।
परशुरामदेवाख्यं वन्दे स्वाचार्यमद्भुतम् ॥१॥

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीमत्परशुरामदेवाचार्यजी महाराज जो सर्वदा समर्चनीय अद्भुत स्वरूप में सतत विराजमान उनकी हम सर्वात्मना अभिवन्दना करते हैं ॥१॥

सर्वेश्वरप्रभोः सेवा-संलग्नं प्रत्यहं मुदा ।
परशुरामदेवाऽऽख्यं वन्दे स्वाचार्यमद्भुतम् ॥२॥

श्रीसनकादिक महर्षियों के सेव्य श्रीसर्वेश्वर शालग्राम स्वरूप जो श्रीहँस भगवान् से महर्षिवर्य श्रीसनकादिकों को प्राप्त हुए और इनसे देवर्षि श्रीनारदजी को तथा आपसे श्रीनिम्बार्क भगवान् को प्राप्त हुए जो परम्परा प्राप्त श्रीआचार्यप्रवर श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज को आपके गुरुप्रवर जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर रसिकराजराजेश्वर श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज से प्राप्त हुए जो अद्यावधि अ० भा० श्री निम्बार्काचार्यपीठ में श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर को परम्परानुसार प्राप्त होते रहते हैं। इन्हीं भगवान् श्रीसर्वेश्वर की नित्य सेवा में सदा संलग्न आचार्यवर्य श्रीमत्परशुरामदेवाचार्यजी महाराज के पावन चरणारविन्दों में वन्दना करते हैं ॥२॥

आद्याचार्यवदाचारतत्परं युग्मभक्तिदम् ।
परशुरामदेवाऽऽख्यं वन्दे स्वाचार्यमद्भुतम् ॥३॥

सुदर्शनचक्रावतार आद्याचार्यवर्य श्रीनिम्बार्क भगवान् द्वारा निगमागम प्रतिपादित जो सदाचार--पद्धति है उसी के अनुसार सदाचार परायण वृन्दावननिकुन्जविहारी भगवान् श्रीराधाकृष्ण की रसमयी पराभक्ति को शरणागत भक्तजनों को प्रदान करने वाले आचार्यवरेण्य श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज जिनका अनिर्वचनीय स्वरूप है उनकी पुनः-पुनः अभिवन्दना ।।३

अनन्तसिद्धिसम्पन्नं भावुकानन्दवर्द्धनम् ।
परशुरामदेवाऽऽख्यं वन्दे स्वाचार्यमद्भुतम् ।।४।।

अणिमा, महिमा, लघिमा आदि समस्त अष्ट-सिद्धियाँ जिनके श्रीचरणकमलों में विलुण्ठित रहती हैं तथा परम भावुकजनों के समस्त वैभव एवं परमानन्दसुधारस को अभिवर्द्धन करने में तत्पर ऐसे जगद्गुरु आचार्यचरण श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज की वन्दना करते हैं ।।४।।

कल्पपादपसद्रूपं श्रुतिसिद्धान्तदर्शकम् ।
परशुरामदेवाऽऽख्यं वन्दे स्वाचार्यमद्भुतम् ।।५।।

शरणागत भक्तजनों के इच्छित मनोरथों को प्रदान करने में कल्पवृक्षरूप एवं श्रुति-सूत्र-पुराणादि शास्त्र प्रतिपादित स्वाभाविक द्वैताद्वैत सिद्धान्त के उपदेष्टा श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर विलक्षण चमत्कृतिपूर्ण स्वरूप में विराजित श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज की नित्य वन्दना करते हैं ।।५।।

राधाकृष्णपदाम्भोज-चिन्तने निरतं मुहुः ।
परशुरामदेवाऽऽख्यं वन्दे स्वाचार्यमद्भुतम् ।।६।।

वृन्दावननवनिकुञ्जेश्वर भगवान् श्रीराधाकृष्ण के श्रीयुगलचरणकमलों के मङ्गल--चिन्तन में सतत अभिनिरत आचार्यप्रवर श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज की पावन वन्दना करते हैं ।।६।।

श्रीमन्निम्बार्कराद्धान्त — द्वैताद्वैतप्रसारकम् ।
परशुरामदेवाऽऽख्यं वन्दे स्वाचार्यमद्भुतम् ।।७।।

श्रीसुदर्शनावतार श्रीमन्निम्बार्क भगवान् के श्रुति--सम्मत स्वाभाविक द्वैताद्वैत सिद्धान्त के प्रचार-प्रसार में तत्पर आचार्यमूर्द्धन्य श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज की प्रतिपल वन्दना करते हैं ।।७।।

व्रजवृन्दावने कुञ्जे युग्मलीलाऽभिचिन्तकम् ।
परशुरामदेवाऽऽख्यं वन्दे स्वाचार्यमद्भुतम् ।।८।।

व्रज--वृन्दावन के मञ्जुल--कुञ्जों में अवस्थित रहकर अपने हृदयाराध्य निकुञ्जेश्वर सर्वेश्वर युगलकिशोर श्रीराधामाधव के मंगलमय चिन्तन ध्यान में तल्लीन आचार्य शिरोमणि (स्वामीजी) श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज जिनका अद्भुत पावन स्वरूप है उनकी अनवरत वन्दना करते हैं ।।८।।

ग्रन्थस्तं रचितो येन परशुरामसागरः ।
परशुरामदेवाऽऽख्यं वन्दे स्वाचार्यमद्भुतम् ।।९।।

जिन्होंने "श्रीपरशुरामसागर" नामक महान् ग्रन्थ की रचना कर उपासना, सिद्धान्त के अतिरिक्त सर्वजन हितकारी प्रेरणात्मक उपदेश उद्बोधन प्रदान किया है ऐसे परमाचार्यप्रवर श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज का मनसा, वाचा, कर्मणा अभिवन्दन करते हैं ।।९।।

येन भक्तिमती मीरा विधिना तं प्रदीक्षिता ।
परशुरामदेवाऽऽख्यं वन्दे स्वाचार्यमद्भुतम् ।।१०।।

विश्व–विख्यात भक्ताग्रगण्य भक्तिमती श्रीमीरांबाई को जिन्होंने श्रीगोपालमन्त्रराज की वैष्णवी मन्त्रदीक्षा प्रदान करने का परमानुग्रह किया है ऐसे हृदयाराध्य आचाय-शिरोमणि श्रीमत्परशुरामदेवाचार्यजी महाराज को समग्रतया अभिवन्दन समर्पित करते हैं ।।१०।।

श्रीमत्परशुरामस्य स्तोत्रं सर्वार्थसम्प्रदम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।११।।

यह प्रस्तुत "श्रीपरशुराम--स्तवावली" ग्रन्थ समस्त पुरुषार्थ चतुष्टय धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को देने वाला है, इसकी पावन रचना इन्हीं श्रीआचार्यवर्य श्रीचरणों की मङ्गल कृपा का मधुर प्रसाद है ।।११।।

श्रीपरशुरामदेवाचार्य–चतुश्श्लोकी

श्रुति–पुराण–तन्त्रज्ञं राधासर्वेश्वराश्रितम् ।
परशुरामाचार्यं वन्दे नित्यं जगद्गुरुम् ।।१।।

वेद--पुराण--तन्त्रादि विविध शास्त्रों के मर्मज्ञ ज्ञाता भगवान् श्रीराधासर्वेश्वर के श्रीयुगलपदकमल के सर्वदा समाश्रित जगद्गुरु आचार्यप्रवर श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज की प्रतिदिन अभिवन्दना करते हैं ।।१।।

निम्बार्काचार्यपीठेशं श्रीमन्निम्बार्करूपिणम् ।
परशुराममाचार्यं वन्दे नित्यं जगद्गुरुम् ।।२।।

श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीभगवन्निम्बार्क के दिव्य स्वरूप में सुशोभित श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज की नियमित नित्यप्रति वन्दना करते हैं ।।२।।

श्रीहरिव्यासदेवानां शिष्यं सर्वप्रपूजितम् ।
परशुराममाचार्यं वन्दे नित्यं जगद्गुरुम् ।।३।।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर रसिकराजराजेश्वर महावाणीकार श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज के परम कृपापात्र पट्टशिष्य एवं सर्वत्र सम्पूर्ण सन्त सुधीजनों भावुक भगवज्जनों द्वारा सर्वदा सम्पूजित जगद्गुरु श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज की नित्यशः वन्दना करते हैं ।।३।।

प्रत्यक्षं सिद्धिदं दिव्यं देवाचार्यं दयाकरम् ।
परशुराममाचार्यं वन्दे नित्यं जगद्गुरुम् ।।४।।

जो अद्यावधि प्रत्यक्ष रूप में विराजित और प्रत्यक्ष सिद्धि के परम प्रदाता दिव्य स्वरूप दया के अगाधसिन्धु जगद्गुरुवर श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज की नित्यरूप से पावन वन्दना करते हैं ।।४।।



श्रीनिम्बारकपीठ पर, परिशोभित अविराम ।
जगद्गुरु श्रीपरशुराम, 'शरण' परम ललाम ।।
तुलसी-माला पर जपत, अविरल राधेश्याम ।।
जगद्गुरु श्रीपरशुराम, 'शरण' सदा निष्काम ।।
सर्वेश्वर-सेवा निरत, हवन परायण आप ।
जगद्गुरु श्रीपरशुराम, 'शरण' करत हरि जाप ।।
तत्त्ववेता सुशिष्य को, किया दिव्य उपदेश ।
परशुराम श्रीपदकमल, प्रणमत 'शरण' नरेश ।।

जगद्गुरुवर–आरती

जगद्गुरु श्रीआचारजवर, परशुराम शुभ आरति करिये ।
श्रीनिम्बारक-पीठाधीश्वर, मङ्गल जप कर रसना रसिये ।।
भाल-तिलक अरु श्रीतुलसी मणि,-माल सुशोभित चित अवधरि
श्रीसर्वेश्वर सेवा अभिरत, दर्शन कर भव-जलनिधि तरिये ।।
होम निरत नित मंत्रराज जप, ध्यान परायण नाम सुमरिये ।
धर्म सनातन वैष्णवता श्रुति,-सार कथन रत चरण पकरिये ।।
परमाचार्यप्रवर–चरणाम्बुज,-कृपा-सुधा को अन्तर भरिये ।
सकल मनोरथ सम्परिपूरक,-कल्पतरुतर अति सुख वरिये ।।
राधामाधव हिय समुपासत, दीनदयाकर पदरज परिये ।
गोघृत संयुत तूल-वरतिका, कर नीराजन जय उच्चरिये ।।
शुभ शंखोदक सुभग आरती, पावन जलकण पातक हरिये ।
'शरण सदा राधासर्वेश्वर', पुष्पाञ्जलि कर सुख सञ्चरिये ।।

(१)

हंस–सनकादि महर्षिवर, नारद सुर्रषि–श्रेष्ठ ।
श्रीनिम्बार्क-परम्परा, 'शरण' परम शुभ श्रेष्ठ ॥

(२)

श्रीश्रीनिवासाचार्यश्री,–निम्बारक के शिष्य ।
कौस्तुभभाष्य रचयिता, 'शरण' सुर्रषि प्रशिष्य ॥

(३)

श्रीद्वादशाचार्यवर्य, अष्टादश हैं भट्ट ।
श्रीश्रीभट्टाचार्यवर, 'शरण' सुशिष्य पट्ट ॥

(४)

श्रीश्रीभट्ट--पट्टशिष्य, प्रसिद्ध वाणीकार ।
श्रीहरिव्यासदेववर, 'शरण' वैष्णवाधार ॥

(५)

वैष्णवदेवी को दयी, दीक्षा गोपालमन्त्र ।
जम्बू पावन क्षेत्र में, 'शरण' प्रसारक यन्त्र ॥

(६)

श्रीहरिव्यासदेव के, द्वादश–शिष्य प्रसिद्ध ।
उनमें परशुरामदेव, 'शरण' साधना सिद्ध ॥

(७)

हरिव्यासदेवाचार्यश्री,–प्रमुख शिष्य में नाम ।
परम्परा-सेवा मिली, 'शरण' समर्थ ललाम ॥

(८)

पुष्कर तीर्थक्षेत्र में, तीर्थ निम्बारक धाम ।
निम्बार्काचार्यपीठपर, 'शरण' परशु विश्राम ।।

(९)

श्रीसद्गुरु करकमल शुभ, पाये शालग्राम ।
सनकादिकसेवित 'शरण', प्रभु सर्वेश्वर नाम ।।

(१०)

सर्वेश्वर ग्रीवा लसत, तिलक सुशोभित भाल ।
तुलसी कण्ठी कण्ठ धर, 'शरण' कराम्बुज-माल ।।

(११)

परशुराम आचार्यवर, निज गुरु श्रीहरिव्यास ।
कृपा पाय सेवा निरत, 'शरण' हरत भव त्रास ।।

(१२)

सर्वेश्वर प्रभु कण्ठ में, शोभित शालग्राम ।
सनकादिक-परिसेव्य हैं, शरण' परशु प्रणाम ।।

(१३)

सनकादिक सेवित प्रभू, सर्वेश्वर शुभ दर्श ।
परशुराम सेवा निरत, 'शरण' परम आदर्श ।।

(१४)

राधाकृष्ण-उपासना, वृन्दावन व्रजवास ।
परशुराम पुष्कर-मही, 'शरण' दिव्य छवि भास ।।

(१५)

द्वैताद्वैत-सिद्धान्त है, वह स्वाभाविक रूप ।
श्रीनिम्बारक-प्रवर्तित, 'शरण' यथा रवि-धूप ।।

(१६)

पुष्कर पावन क्षेत्र में, श्रीनिम्बारकपीठ ।
जहाँ सुशोभित परशुरां, 'शरण' पीठ अधीष्ठ ।।

(१७)

श्रीनिम्बार्कपीठाधीश, श्रीपरशुरामदेव ।
आचार्यछवि दर्शन सुभग, 'शरण' पदाम्बुज सेव ।।

(१८)

विक्रम पन्द्रहवीं सदी, भूतल कियो सनाथ ।
परशुराम श्रीजगद्गुरु, 'शरण' नमत हम माथ ।।

(१९)

भाद्रमास बदि पञ्चमी, श्रीनिम्बारकपीठ ।
परशुराम शोभित मही, 'शरण' युगलपद-निष्ठ ।।

(२०)

आचार्य श्रीहरिव्यास के, प्रमुख शिष्य में नाम ।
परशुराम प्रख्यात हैं, 'शरण' कोटि प्रणाम ।।

(२१)

श्रीनिम्बार्कपीठ के, आचार्यश्री विख्यात ।
परशुराम शुभ नाम रट, 'शरण' नमत नित प्रात ।।

(२२)

पुष्कर सुरम्य क्षेत्र में, शुभ निम्बार्कतीर्थ ।
परिशोभित श्रीपरशुरां, 'शरण' पवित्र सुतीर्थ ।।

(२३)

परशुराम आचार्यवर्य,–तपोभूमि अतिसिद्ध ।
श्रीनिम्बारकपीठ है, 'शरण' जगत प्रसिद्ध ।।

(२४)

पट्ट-शिष्य हरिवंश को, किया पीठ अभिषेक ।
श्यामाश्याम–उपासना, 'शरण' परशु शुभ टेक ।।

(२५)

तत्त्ववेत्ता निज शिष्य को, किया मन्त्र-उपदेश ।
परशुरामवाणी सरस, 'शरण' देत सन्देश ।।

(२६)

मीरा को दीक्षा दयी, सेवा गिरिधर लाल ।
मीराजी कृतकृत्य भयी, 'शरण' परशु प्रतिपाल ।।

(२७)

मीरा के ठाकुर रुचिर, श्रीगिरिधर–गोपाल ।
पुष्कर पावन स्थान में, 'शरण' सुशोभित माल ।।

(२८)

श्रीनिम्बार्क-परम्परा,–परमाचार्य प्रसिद्ध ।
परशुराम आचार्यवर्य, 'शरण' सहज रससिद्ध ।।

(२९)

वृन्दावन रसकुञ्ज के, समुपासक आचार्य ।
परशुराम अतिसिद्ध है, 'शरण' प्रणति अनिवार्य ।।

(३०)

श्रीस्वामीजी शुभनाम से, गुरुवर नाम विख्यात ।
परशुराम प्रत्यक्ष हैं, 'शरण' विदित भव बात ।।

(३१)

श्रीनिकुञ्जलीलापरक, करत ध्यान निशिभोर ।
परशुराम आचार्यश्री, 'शरण' सुभक्ति विभोर ।।

(३२)

परशुरामसागर सुभग, शुभ वाणी अति सिद्ध ।
परशुराम आचार्यवर्य, 'शरण' परम प्रसिद्ध ।।

(३३)

श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, श्रीसर्वेश्वरदेव ।
राधामाधव, प्रिय दरश 'शरण' सदा प्रभु सेव ।।

(३४)

रसकवि जयदेव के, राधामाधव सेव्य ।
शोभित पीठ अवनि पर, 'शरण' सदा प्रसेव्य ।।

(३५)

परशुरामश्रीपरमगुरु, कृपादृष्टि से आज ।
सकल मनोरथ सिद्ध हैं, 'शरण' प्रसिद्ध समाज ।।

(३६)

चञ्चल मन गतिशील है, इसका हो अवरोध ।
परशुराम सत्कृपादृष्टि, पावत 'शरण' निरोध ।।

(३७)

श्रीनिम्बारक जगद्गुरु,–पीठ विराजित आप ।
श्रीमत्परशुरामदेव, 'शरण' करत हरि–जाप ।।

(३८)

तन्त्र-मन्त्र अथ यन्त्र से, निशिचर-निकर निवार ।
ऐसे पावन परशुराम, 'शरण' सदा जयकार ।।

(३९)

गो-ब्राह्मण अरु सन्तजन,–शरणागत प्रतिपाल ।
परशुराम स्वाचार्यवर, 'शरण' सतत कर-माल ।।

(४०)

सन्त-महन्त सेवित सदा, बुधवर–योगीराट् ।
जगद्गुरुवर परशुराम, 'शरण' सन्त–सम्राट् ।।

(४१)

कृपा–दया के धाम हैं, सर्वेश्वर–अनुराग ।
पावन महिमा परशुराम, 'शरण' अखण्ड विराग ।।

(४२)

अतुलित करुणासिन्धु हैं, शान्ति-सुधा शुभकोष ।
परशुराम आचार्यवर, 'शरण' दीन–जन पोष ।।

(४३)

श्रीनिम्बारकतीर्थ तप, पुष्करतीर्थ निवास ।
सर्वेश्वर-प्रिय परशुरां, 'शरण' भजो बन दास ॥

(४४)

श्रीनिम्बार्कतीर्थ धन्य, महिमा पद्मपुराण ।
जहाँ विराजत परशुराम, 'शरण' करत भव त्राण ॥

(४५)

साभ्रमती पावन नदी,-तटीय तीर्थ महान ।
विचरत शुभ महि परशुराँ, 'शरण' निरत हरि ध्यान ॥

(४६)

श्रीसर्वेश्वर समुपासना, राधाकृष्ण प्रभु ध्यान ।
वैष्णवता हित परशुराँ, 'शरण' सतत अवधान ॥

(४७)

शास्त्रपरक उपदेश रत, गोपालमन्त्ररत जाप ।
परशुरामदेवाचार्य 'शरण' कृपामय आप ॥

(४८)

अतुलित वैभव-सम्पदा, सभी का करके त्याग ।
नागपर्वत परशुराम, 'शरण' तपोरत याग ॥

(४९)

परशुरामदेवाचार्य, पुष्कर करत निवास ।
युगल आराधन निरत नित, 'शरण' हरत संत्रास ॥

(५०)

शास्त्रविहित श्रुतिमन्त्र से, बाधा हरत अपार ।
ऐसे पावन परशुराँ, 'शरण' प्रणत हर बार ।।

(५१)

विकट कष्ट में जो शरण, श्रीमच्चरणसरोज ।
कृपा करत श्रीपरशुराँ, 'शरण' चरण भज रोज ।।

(५२)

परशुराम श्रीहवनकुण्ड, महिमा भस्म अपार ।
धारण सेवन जो करै, 'शरण' सिद्धि सञ्चार ।।

(५३)

परशुरामसागर सरस,–वाणी का नित पाठ ।
जो साधक प्रतिदिन करै, 'शरण' उसे सब ठाठ ।।

(५४)

अपने मन में ध्यान हो, प्रतिदिन श्रीगुरुदेव ।
परम कृपामय परशुराँ, 'शरण' चरण नित सेव ।।

(५५)

निज अन्तर में युगलवर, शरण गहो स्वाचार्य ।
श्रीपरशुरामदेववर, 'शरण' कृपा अनिवार्य ।।

(५६)

सकल मनोरथ सम्पूरक, सिद्ध कामना होय ।
परशुराम श्रीचरणरज, 'शरण' चहो सब कोय ।।

(१)

परशुराम शुभ सुखद बधाई ।
भारत-पावन मरु वसुधा पर, करी कृपा शुभ अति सुखदाई ।।
व्रजभूमि वस युगल भावना, श्रीहरिव्यास सद्गुरु पाई ।
राधाकृष्ण पदकमल भक्तिरत, पुष्कर-उत्तर पीठ वसाई ।।
श्रीसर्वेश्वर शोभित ग्रीवा, प्रतिपल श्रीप्रभु सुमति लगाई ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, परशुराम भज प्रभु दरशाई ।।

(२)

आज पाटोत्सव सरस बधाई ।
श्रीनिम्बारक तीरथ सुन्दर, साभ्रमती तट रस वरषाई ।।
सन्त-सुधीजन मागधगण भी, श्रीआचारज कीरति गाई ।
मोर-कोकिला-सरस सारिका, कीर्तन कर२ अति हरषाई ।।
परशुराम श्रीचरणयुगल की, मधुर वन्दना कर पुलकाई ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, श्रीनिम्बारकपीठ बसाई ।।

(३)

महामहोत्सव पीठ मही पर ।
आचारजवर परशुरामश्री, आज बधाई गावत बुधवर ।।
मंगल तुरई बाजत भेरी, स्वरमंजूषा मृदंग झांझर ।
व्रजवासीजन मरुधर आवत, गावत नाचत बोलत जय स्वर ।।
परशुराम जय स्वामीजो की, उचरत पुलकित कर ऊपर कर ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, अति हर्षित हैं भावुक परिकर ।।

(४)

श्रीपाटोत्सव बधाई गावो ।
भादौं पंचमी कृष्णपक्ष की, नभ घन वर्षत गर्जत पावो ।।
श्रीमत्स्वामी आचारजवर, शुभ-पाटोत्सव अति हरषावो ।
परशुरामप्रिय श्रीचरणाम्बुज, सुमनवृष्टि कर हिय सरसावो ।।
जय२ उचरत भावुकजन भी, निज तन जीवन धन्य बनावो ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, चरणामृत लै भाग सरावो ।।

(५)

गावो बधाई जय–जय बोल ।
श्रीनिम्बारकपीठ धरा पर, मधुर महोत्सव अन्तर खोल ।।
परमाचारज परशुरामवर, शुभ पाटोत्सव-रसामृत घोल ।
श्रीनिम्बारकतीर्थ भूमि है, सुभग सरोवर दरश अनमोल ।।
मंजुल मोहक ललित द्रुमावलि, खगगन-कलरव बाजत ढ़ोल ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, कमल-कुसुम-कलि सुसज्जित डोल ।।

(६)

श्रीस्वामीजी महाराज सदा जय ।
परम जगद्गुरु आचारज वर, चरण-कृपारज भावुक निर्भय ।।
परशुराम-पद सुयश मही पर, शरणागतजन निखिल दुरित लय
शरण सदा राधासर्वेश्वर, पावो निर्मल चरण-सुधा-पय ।।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री "श्रीजी" महाराज

द्वारा विरचित—

❀ ग्रन्थमाला ❀

१. श्रीनिम्बार्क भगवान् कृत 'प्रातःस्तवराज' पर 'युग्मतत्त्वप्रकाशिका' नामक संस्कृत व्याख्या श्लोक सं.

२. श्रीयुगलगीतिशतकम्	[संस्कृत-पद्या०]	प्रकाशित	११८
३. उपदेश—दर्शन	[हिन्दी-गद्यात्मक]	,,	
४. श्रीसर्वेश्वर सुधा-बिन्दु	[पद सं० ११८[	,,	
५. श्रीस्तवरत्नाञ्जलिः	[संस्कृत पद्यात्मक]	,,	३८२
६. श्रीराधामाधवशतकम्	,,	,,	१०५
७. श्रीनिकुञ्ज सौरभम्	,,	,,	५८
८. हिन्दु संघटन	[हिन्दी-गद्यात्मक]	,,	
९. भारत-भारती-वैभवम्	[संस्कृत-पद्यात्मक]	,,	१३५
१०. श्रीयुगलस्तवविंशतिः	,,	,,	१८६
११. श्रीजानकीवल्लभस्तवः	,,	,,	४०
१२. श्रीहनुमन्महाष्टकम्	,,	,,	२२
१३. श्रीनिम्बार्कगोपीजनवल्लभाष्टकम्	,,	,,	१५

पुस्तक प्राप्ति स्थान—
अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद), पुष्करक्षेत्र
किशनगढ़, अजमेर [राजस्थान]

प्रथमावृत्ति—
एक हजार

मुद्रक—
श्रीनिम्बार्क – मुद्रणालय
निम्बार्कतीर्थ [सलेमाबाद]
किशनगढ़, अजमेर (राजस्थान)

न्यौछावर—
दो रुपये मात्र